मूल्य: १०.०० रुपया

तित्थयर

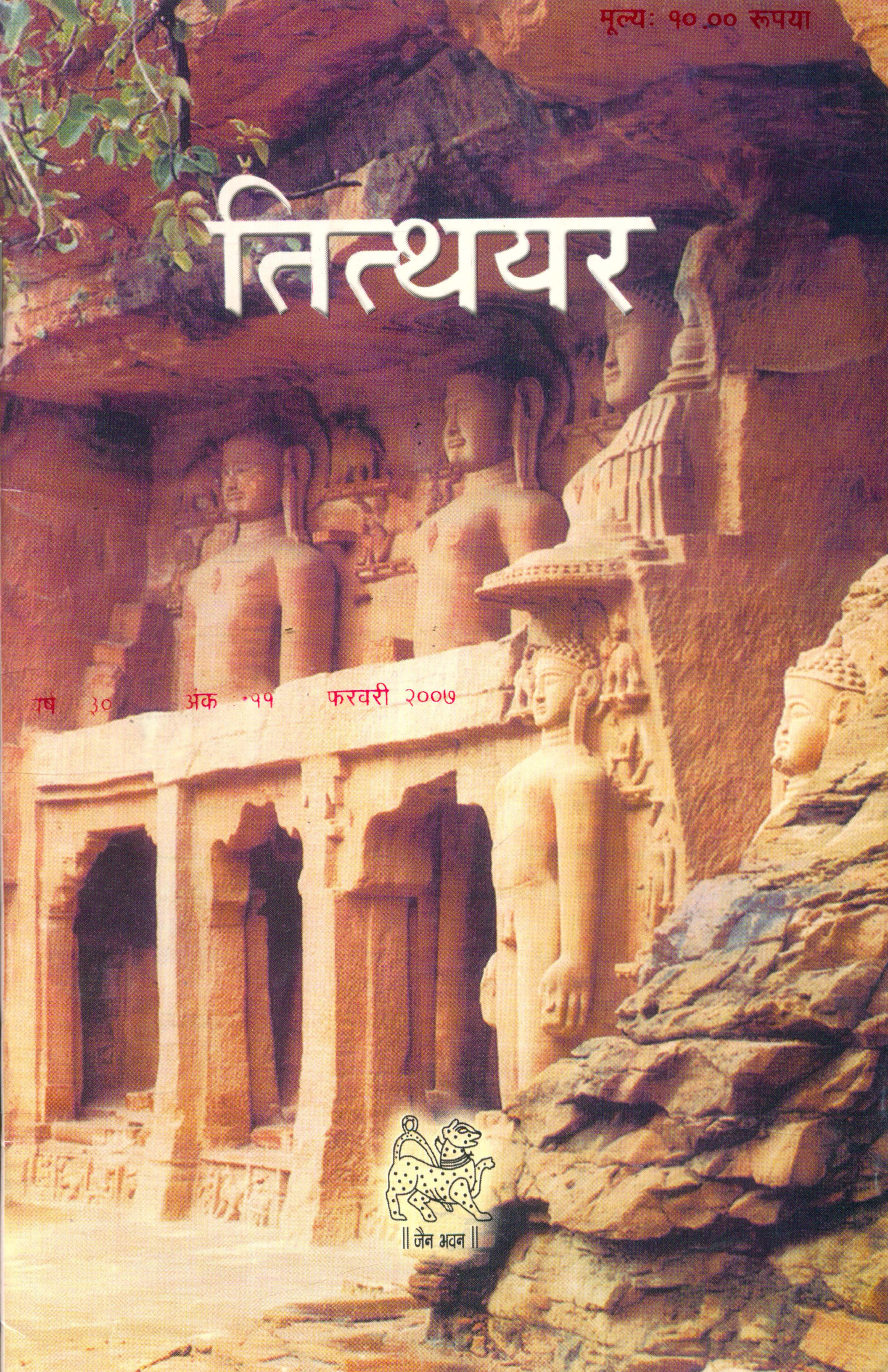

ाष ३० अंक ११ फरवरी २००७

॥ जैन भवन ॥

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३० | अंक - ११, फरवरी | २००७

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता – Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655,

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	मुद्राराक्षस की सामाजिक-पीठिका में जैन तत्त्व	साहित्य वाचस्पति महोपाध्याय विनयसागर	५२५
२.	सुवर्णभूमि में कालकाचार्य	डॉ. उमाकान्त शाह	५३२
३.	प्रतिभामूर्ति सिद्धसेन दिवाकर	श्रीयुत पं. सुखलालजी	५३९
४.	सिंहल की राजकन्या (**सुदर्शना**)	आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.	५४५

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

मुद्राराक्षस की सामाजिक पीठिका में जैन तत्त्व

साहित्य वाचस्पति महोपाध्याय विनयसागर

महाकवि विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षस नामक नाटक में क्षपणक जीवसिद्धि नामक पात्र अमात्य चाणक्य द्वारा चररूप में प्रयुक्त दूतकार्य को सम्पन्न करता है। उसको आधुनिक विद्वद्वृन्द बौद्धधर्मीय संयासी मानते हैं, किन्तु पात्रविषयक वर्णन का सम्यक् आलोडन करने पर एवं उसकी वेशभूषा, रहन-सहन और दार्शनिकता आदि का विचार करने पर न केवल पात्र जीवसिद्धि क्षपणक जैन साधु सिद्ध होता है, अपितु सारे नाटक की पृष्ठभूमि ही जैन प्रतीत होती है।

जीवसिद्धि विष्णुशर्मा नामक एक ब्राह्मण अमात्य चाणक्य का सहपाठी और मित्र था, शुक्राचार्य के नीति शास्त्र में और ६४ अंगवाले ज्योतिष शास्त्र में बहुत ही प्रवीण था, जिसको चाणक्य ने इससे विशेष प्रयोजन सिद्ध होगा ऐसा विचार कर नन्द वध की प्रतिज्ञा के पश्चात् ही क्षपणक वेषधारण करवाकर कुसुमपुर ले जाकर, नन्दराजा के समग्र अमात्यों के साथ में मैत्री-संबन्ध स्थापित करा दिया था। मंत्रीमण्डल में भी अमात्य राक्षस का उस पर अत्यधिक विश्वास उत्पन्न हो गया था।

जैन वेष

चाणक्य के कार्य सिद्धयर्थ एवं सौहार्द को दृढ़ करने के ध्येय से विष्णु शर्मा ने क्षपणक जैन साधु का वेषधारण किया और स्वनाम को परिवर्तित कर जीवसिद्धि नाम रखा। एकबार वह नाटक में ज्योतिषी के रूप में भी आता है। जिस समय अमात्य राक्षस अपने पक्ष की सर्व सैन्यसामग्री को पूर्ण देखकर चन्द्रगुप्त से युद्ध करने के लिये प्रस्थान मुहूर्त्त दर्शनार्थ ज्योतिषी को बुलाने की इच्छा से प्रतिहारी को बुलाकर पूछता है कि प्रतिहार–स्थल पर कौन सा ज्योतिषी है? द्वारपाल बाहर जाकर द्वार स्थान को देखकर पुनः आकर कहता है कि हे अमात्य! द्वार पर क्षपणक जीवसिद्धि नामक ज्योतिषी है। यह सुनकर

राक्षस अपने हृदय में सोचता है कि प्रारंभ में ही अमंगल-कारक क्षपणक दर्शन मिला और अंत में प्रतिहारी को आज्ञा देता है कि उसको अबीभत्स वेष वाला करके यहां उपस्थित करो (अबीभत्सदर्शनं कृत्वा प्रवेशय)

यहां प्रथम तो क्षपणक शब्द ही जैन का द्योतक है। जैन ग्रन्थों में कर्मों के नाश के लिये क्षपण या उपशम का प्रयोग पाया जाता है। जैन साधुओं का व्रत धारण करने का उद्देश्य ही क्षपकश्रेणी पर आरूढ़ होकर कर्मों का क्षपण करना होता है, अतः कर्मो का जो क्षपण करता है, वही साधु क्षपणक हो सकता है। कर्म प्रकृति विषयक ग्रन्थों में क्षपणकसार नामक ग्रन्थ भी मिलता है जो कि जैनों का एक प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। और संभवतः क्षपणक शब्द बौद्धधर्म में संन्यासियों के लिये नहीं आता है। इसके अतिरिक्त दूसरी बात यह है कि जैन साधु सर्वदा नग्न जैसे ही रहा रहते हैं। इसमें अबीभत्सदर्शनं कृत्वा प्रवेशय वाक्य स्पष्टतया नग्नत्व के जैसे सूचित कर रहा है।

जैन शासन

अमात्य राक्षस के बुलाने पर क्षपणक वहां जाता है और कहता है कि- मोहरूपी व्याधि को नाश करने वाला जैन अरिहन्ताणं का शासन अंगीकार करो, जो प्रारंभ में शारीरिक कष्टादि कटु लगते हैं। पश्चात् हितकारक-मोक्षदायक, आत्मतत्त्व का उपदेश देकर शीघ्र ही भवपिण्ड से छुड़ा देते हैं। इसके पश्चात् कहता है कि-हे श्राद्ध! धर्मलाभ हो। यही नहीं आगे चलकर नाटक के पंचम अंक में सिद्धार्थ के सन्मुख वह कहता है-अरिहन्ताणं को प्रणाम करो, जो अपनी असाधारण (केवलज्ञानरूपी) बुद्धि से इस लोक में श्रेष्ठ मोक्षमार्ग का साधन करते हैं। क्षपणक के इस प्रकार कहने पर सिद्धार्थ कहता है-हे भगवन्! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। इस पर जीवसिद्धि उत्तर देता है-हे श्रावक! तुम्हें धर्मलाभ हो (धम्मलाहो! सावका भोदु), और इसी अंक में भागुरायण के समक्ष भी आशीर्वादात्मक वाक्य में वाक्य धर्म की वुद्धि हो (सावण्णं धम्मविही भोदु) ऐसा कहता है।

इस प्रसंग में अलिहन्ताणं शब्द विचारणीय है। इसका प्रयोग ऊपर दो बार हुआ है। एक स्थल पर सासणं-अलिहन्ताणं और दूसरे स्थल पर अलिहन्ताणं पणमामो। संस्कृत में एक अर्हत् शब्द है जो बौद्धधर्म में भी प्रचलित है और

महात्मा बुद्ध के नामों में गिना जाता हैं। बौद्ध ग्रन्थों में अरहतो भी प्राप्त होता है, यथा–नमो भगवतो अरहतो समासंबुद्धस्स। परन्तु अरिहन्ताणं या अलिहन्ताणं जैन मागधी (प्राकृत) में ही होता है। इसके अतिरिक्त मुद्राराक्षस में इसके जो दो प्रयोग मिलते हैं, उनमें प्रथम स्थान पर तो शासन शब्द के साथ में प्रयुक्त होने से जैनशासन के द्योतक के रूप में ही यह ग्राह्य हो सकता है, क्योंकि शासन शब्द विशेषतया जैन संघ से ही सम्बन्ध रखता है।

इसके अतिरिक्त स्वयं अरिहन्ताणं शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार करने से भी हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते है। साधारणतया अरिहन्त शब्द को अर्हत शब्द का पर्यायवाची मान लिया जाता है, जिसका प्रयोग जैन और बौद्ध दोनों धर्मों में समानरूप से होता है। परन्तु भाषाविज्ञान की दृष्टि से अरिहन्त और अर्हत् शब्द पृथक-कृथक हैं, जैसा कि अनेक जैन ग्रन्थों में भी मिलता है। पंचमांग श्री भगवती सूत्र के टीकाकार श्रीमद् अभयदेवसूरी ने अरिहन्ताणं शब्द पर विचार करते हुए निम्नलिखित विभिन्न शब्दों के एकीकरण की ओर संकेत किया हैः-

१. अरहन्त – अर्हद्भयः, अमरवरविनिर्मिताऽशोकादिमहाप्रातिहार्यरूपा पूजां अर्हन्तीति अर्हन्तः। यदाह–

> अरहन्ति वंदण–नमंसणाणि, अरहंति पूअसक्कारं।
> सिद्धिगमणं च अरहा, अरहंता तेण वुच्चंति।।

श्रेष्ठ देवताओं द्वारा निर्मित अष्टमहाप्रातिहार्य* पूजा को प्राप्त हो। वन्दन, नमस्कार, पूजा, सत्कार और मोक्ष-गमन प्राप्त करें, उसको अरहन्त कहते हैं।

२. अ–रह–न्तः – (अ) विद्यामानं, (रहः) एकान्तरूपो देशः, (अन्तर्) अन्तश्च मध्यं गिरिगुहादीनां सर्ववेदितया समस्तवस्तुस्तोम–गतप्रच्छन्नत्वस्याभावेन येषां ते अरहोन्तरः, अतस्तेभ्यो अरहोन्तर्भ्यः।

(अ) विद्यमान है, (रहः) एकान्तरूप देश का भी, (अन्तर) मध्य जिनको, उनको अरहोन्तः कहते हैं, क्योंकि सर्ववेदी होने के कारण उनके ज्ञान से विश्व के कोई भी पदार्थ प्रच्छन्न नहीं हैं।

---

* अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिः, दिव्यध्वनिर्भासनमासनं च।
भामण्डलं दुन्दुभिमातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम्।।

३. अरथान्तः- (अ) अविद्यमानो, (रथः) स्यन्दनः-सकल परिग्रहोपलक्षणभूतः। (अंतः) च विनाशो जराद्युपलक्षणभूतो येषां ते अरथान्तः।

(अ) नहीं विद्यमान है (रथः) परिग्रह और (अन्तर) जराजन्म-मृत्यु जिनके उन्हें अरथान्तः कहते हैं।

४. अरहन्तः- अरहंताणं त्ति क्वचिदपि आसक्तिं अगच्छद्भयः हो, उन्हें अरहंत कहते हैं।

क्षीणराग होने के कारण जिनकी किसी भी स्थान पर आसक्ति न हो, उन्हें अरहंत कहते हैं।

५. अरहयत्:- अरहयद्भः प्रकृष्टरागादिहेतुभूतमनोज्ञे तरविषयसंपर्क्के पि वीतरागत्वादिकं स्वं स्वभावं अत्यजद्भयः।

विशेष राग का कारणभूत यदि मनोज्ञ विषय हो तो भी, अथवा विपरीत विषय हो तो भी, अपने वीतराग-(राग द्वेष परिहार) भाव को नहीं छोड़ने वाले अरहयत् कहलाते हैं।

६. अरिहन्त-अरिहन्ताणं त्ति पाठान्तरं, तत्र कर्मारिहन्तृभ्यः। आह च-

अट्ठविहंपि अ कम्मं, अरिभूयं होइ सव्वजीवाणं।
तं कम्मं अरिहंता, अरिहन्ता तेण वुच्चंति।।

(अष्टविद्यमपि च कर्म, अरिभूतं भवति सर्व्वजीवानाम्।
तत् कर्मारीन् ध्नन्तः अरिहन्ता तेण उच्यते)

कर्म्मरूपी शत्रुओं को नष्ट करने वाले अरिहन्त कहलाते हैं। जो आठ* प्रकार के कर्म्म सर्व्वजीवों के लिये शत्रुतुल्य हैं, उन्हें नष्ट करने वाले को अरिहन्त कहते हैं।

७. अरुहन्तः—अरुहंताणं इत्यपि पाठान्तरं, तत्रारोहयद्भयः- अनुपजायमानेभ्यः क्षीणकर्मबीजत्वात्। आह च-

---

* १. ज्ञान-वरणीय, २. दर्शनावरणीय, ३. मोहनीय, ४. वेदनीय, ५. आयु, ६. नाम, ७. गोत्र और ८. अंतराय ये आठ कर्म कहलाते हैं।

दग्धे बीजे यथात्यन्ते, प्रादुर्भवति नाङ्कुरः।
कर्मबीजे तथा दग्धे, न रोहति भवाङ्कुरः।।

कर्मोत्पादक बीज को पूर्णतया नष्ट कर दिया है, जिससे पुनः कर्म उत्पन्न नहीं हो सकते है, अरुहन्तः कहते हैं।

जिस प्रकार बीज के जलने पर अंकुर पैदा नहीं होता है, उसी प्रकार कर्मबीज के नष्ट हो जाने पर पुनः संसार में भ्रमण कराने वाला कर्म उत्पन्न नहीं होता है।

संभवतः प्रारंभ में ये विभिन्न शब्द किसी पूज्य सिद्ध पुरुष के विभिन्न गुणों को प्रकट करने के लिये प्रयुक्त होते होंगे, परन्तु कालान्तर में इन सबमें अर्हत् शब्द के साथ ध्वनिसाम्य और अर्थ सादृश्य होने के कारण इन सबका अर्हत के साथ में एकीकरण कर दिया गया और संस्कृत में इन सबके स्थान पर केवल अर्हत् ही शब्द रह गया।

उक्त शब्दों में अरिहन्त शब्द निःसन्देह अरिहन् से निकला हुआ है, जैसा कि उक्त टीकाकार ने कहा है, और जैसा कि कल्पसूत्र की व्याख्या में भी कहा है:—

अरहन्ताणं त्ति, अर्हद्भयस्त्रिभुवन पूजायोग्येभ्यः।
कर्मवैरिदहनात् अरिहन्ताणं।।

तीनों लोकों में पूजनीय पुरुष को अरहन्त कहते हैं और कर्मशत्रु को नाश करने से अरिहन्त कहते हैं।

जैनों के प्राचीनतम ग्रन्थ भगवती सूत्र से लेकर आज तक जैन साहित्य में यह शब्द प्रचुरता से पाया जाता है। इसके अतिरिक्त सभी जैन सम्प्रदायों के प्रतिक्रमण सूत्रों (जो कि तीर्थंकरों के समय से ही श्रुतिपरंपरागत चले आये हैं) में इस शब्द की उपस्थिति, इस शब्द की प्राचीनता को सिद्ध करती है और उसे जैन शासन की एक विशेषता होना प्रमाणित करती है। इसके अतिरिक्त इस शब्द के पूर्व मोहवाहिवेज्जाणं (मोहराज की कर्मरूपी सेनात्मक व्याधि को नाश करने में निपुण वैद्य के सदृश) विशेषण भी जैन ग्रन्थों में बहुलता से पाया जाता है।

नाटक में शासन के लिये प्रयुक्त पढममात्तकडुअं विशेषण भी जैन शासन से ही अधिक साम्यता रखता है, क्योंकि जैनों में प्रारम्भ से ही इन्द्रियदमन, आत्मशोधनार्थ बाह्यशारीरिक कष्ट, तपस्या, लोचन-व्रतादि कष्टदायक उपाय हैं, जो प्रारंभ में कटु लगते हैं, किन्तु अन्त में शीघ्र ही आत्मशुद्धि करवाकर केवलज्ञान के अधिकारी बना देते हैं। इसीलिये जैन मुनियों के आत्मशुद्धयर्थ पद-पद पर महान् कष्टपूर्ण नियम रखे गये हैं।

जीवसिद्धि के कथन में बुद्धीए शब्द पर टीका करते हुए व्याख्याकार श्री कनकलाल ठाकुर ने लिखा है कि :-

बुद्धे :- मत्यादिपञ्चात्मक ज्ञानस्य (तन्मते मतिश्रुतावधिमनः-पर्यवकेवलमेति पञ्चानां ज्ञानत्वाभ्युपगमात्)

-मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान, केवलज्ञान रूपी, बुद्धि के द्वारा–

इसमें जो मत्यादि पंचज्ञानों का उल्लेख किया है, वह भी जैन–परंपरा की ओर संकेत कर रहा है, क्योंकि जैन शासन इन मत्ति आदि पंच ज्ञानों को ही मानता है एवं समग्रशास्त्रों में इन्हीं का उल्लेख मिलता है। इन्हीं ज्ञानों के ऊपर ही अनेकों ग्रन्थ प्राप्त हैं। बौद्धधर्म न तो इन पांचों ज्ञानों को ही मानता है और न उनके ग्रन्थों में इस प्रकार के नाम ही मिलते हैं। अतः इससे प्रकट है कि नाटककार ने जीवसिद्धि के नग्नत्व या शासन आदि शब्दों के प्रयोग द्वारा ही जैन वातावरण उत्पन्न किया है, अपितु जैन मनोविज्ञान के पारिभाषिक शब्दों को भी अपनाया है।

श्रावक शब्द भी भक्त–उपासक के अर्थ में बौद्धग्रन्थों में प्रायः कहीं नहीं मिलता है और जैनों के समग्र शास्त्रों में भक्तों के विशेषण के लिए श्रावक या श्राद्ध शब्द ही सब जगह प्राप्त होता है। श्रावक जैनियों का पारिभाषिक शब्द है, जिसका अर्थ है :–

धर्म श्रृणोतीति श्रावकः धर्म सुनकर सम्यग् दर्शनरत्न प्राप्त करने की योग्यता रखे उसे श्रावक कहते हैं। इस शब्द का जैन-शासन से सम्बन्ध रखना, इस बात से भी प्रकट है कि इसी श्रावक शब्द का अपभ्रंश होने से सराक और

सरावगी नाम केवल एक जाति के जैनों में ही मिलता है। जैसा कि ऊपर कह चुके है, जीवसिद्धि श्रावकों को सदा जैन मुनियों की भांति ही आशीर्वाद के रूप में धर्मलाभ या धर्मवृद्धि ही कहता है। जैन मुनि इस धर्मलाभ शब्द के अतिरिक्त और कोई आशीर्वादात्मक शब्द उच्चारण नहीं करते हैं और दूसरे संप्रदाय के साधु इस शब्द का व्यवहार नहीं करते।

जैन समाज

अब यहाँ पर विचारने की बात यह है कि मंत्रि चाणक्य जैसे बुद्धिमान कूटनीतिज्ञ ने गर्हित चरकार्य में जैन साधु को ही क्यों प्रयुक्त किया? दूसरे संप्रदाय के साधु को इसमें क्यों नहीं नियुक्त किया? और सारे नाटक में उपयुक्त जैन वातावरण को उत्पन्न करने की क्या आवश्यकता है? इस पर गंभीर दृष्टि से विचार करने पर यह स्पष्ट ध्वनित होता है कि उस समय मगधदेश में सर्वत्र जैनधर्म व्यापकरूप में था, जैन साधुओं का आदर-सत्कार विशेष था। उनके प्रति सब जनता का विश्वास भी प्रगाढ़ था और उनका सर्वत्र आवागमन रहता था। चाणक्य जानता था कि जैन साधुओं पर जनता का अधिक विश्वास होने के कारण उसके द्वारा कार्य शीघ्र सिद्ध होगा। इस सम्बन्ध में जैन साहित्य से तो यह स्पष्ट तथा ज्ञात होता ही है कि मगध जैनों का प्रमुख केन्द्र था। सम्राट बिम्बिसार (श्रेणिक) से लेकर भूपाल सम्प्रति पर्यन्त सभी राजा जैन धर्मानुयायी थे, केवल अशोक ने पीछे धर्म परिवर्तन कर बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। यही नहीं, जैन परम्परा के अनुसार तो महाराज नन्द एवं उनके मंत्री शकडाल और राक्षस, भूपति चन्द्रगुप्त तथा अमात्य चाणक्य भी जैन थे और उस समय जैन धर्म ही सार्वजनिक धर्म था।

अतः संभवतः कवि विशाखदत्त ने स्वयं शैवधर्मानुयायी होने के कारण महाराज चन्द्रगुप्त और चाणक्य को नाटक में जैन नहीं माना। परन्तु साथ ही तत्कालीन समाज का चित्रण करते समय वह उसमें से परंपरागत जैन वातावरण को नहीं निकाल सका।

सुवर्णभूमि में कालकाचार्य

डॉ. उमाकान्त शाह

उज्जेणि कालखमणा, सागरखमणा सुवन्नभूमीए।
इंदो आउयसेसं पुच्छई सादिव्वकरणं च ।।

उत्तराध्ययन-सूत्र विभाग १, (दे. ला. पु० नं. ३३, बम्बई १९१६), पृ० १२५-१२७.

इस निर्युक्ति-गाथा से स्पष्ट है कि निर्युक्तिकार के मत से सुवर्णभूमि जानेवाले, सागर के दादागुरु आर्यकालक और निगोद-व्याख्याता शक्र-संस्तुत आर्यकालक एक ही व्यक्ति हैं। किन्तु मुनिजी को यह मंजूर नहीं है, वे इस निर्युक्तिगाथा पर लिखते हैं- "इस गाथा में सागर के दादागुरु कालकाचार्य के साथ इन्द्र का प्रश्न आदि होना लिखा है, गर्द्दभिल्लोच्छेदक, चतुर्थी पर्यूषणाकारक और अविनीत-शिष्य परिहारक एक ही कालकाचार्य थे, जो ४५३ में विद्यमान थे और श्यामाचार्य की अपेक्षा दूसरे थे। प्रस्तुत स्थविरावली की गाथा में प्रथम कालकाचार्य को निगोदव्याख्याता लिखा है जो कि इस विषय का एक स्पष्ट मतभेद है।"[१]

वास्तव में मुनिजी के लिए उत्तराध्ययन निर्युक्ति के इस विधान को छोड़कर अन्य कल्पना करने का उचित नहीं है क्योंकि निर्युक्ति का प्रमाण मेरुतुंग की और दूसरी मध्यकालीन पट्टावलियों से प्राचीन और ज्यादा विश्वसनीय है। फिर भी यहाँ एक बात को देखना जरूरी होगा कि **मुनिजी के खयाल से भी गर्द्दभिल्लोच्छेदक, अविनीतशिष्य-परिहारक (सुवर्णभूमि को जानेवाले) और चतुर्थी पर्यूषण कारक कालकाचार्य एक ही व्यक्ति थे।**

(५) अब नं. ५ आदि घटनायें देखें। शककुलों को भारत में लाकर गर्दभराज़ा का उच्छेद करने की कथा इताहासविदों को सुप्रतीत है। वहाँ भी निमित्त और विद्याज्ञान का उपयोग होता है। हम देख चुके है कि बृहत्कल्पभाष्य और चूर्णि में इस घटना का और नं. ७ की घटना का उल्लेख है मगर दोनों में से एक भी ग्रन्थकार इन दोनों घटनावाले कालक के भिन्न भिन्न होने का कोई सूचना नहीं देते और जब उत्तराध्ययन-निर्युक्ति नं. ७ और नं. २ वाले

१. वही, पृ० ६४-६५ पादनोंध।

कालकाचार्य को एक ही व्यक्ति मानती है तब नं. ५, नं. ७ और नं. २ वाले कालक एक ही हैं।

६) नं. ६ वाली घटना में कहा गया है कि बलमित्र-भानुमित्र नामक अपने भागिनेय राजाओं से नाराज होकर आर्य कालक प्रतिष्ठानपुर जाने को निकले। बलमित्र के पुरोहित ने जैन मुनियों को अकल्प्य आहार दिलवाना शुरू किया जिससे साधुओं को भूखे रहना पड़ा। अतः कालकाचार्य ने प्रतिष्ठानपुर जाने के लिए विहार किया। वहाँ के राजा सालाहण (सातवाहन-जो जैन धर्म की ओर, विशेषतः आर्यकालक की ओर, अभिरुचि रखता होगा) को आचार्य ने कहा कि भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी को पर्यूषण पर्व करो। राजा ने कहा कि उस नगर में वह तिथि आम प्रजा में इन्द्र महोत्सव का पर्व मनाया जाता है इस लिए आचार्य की आज्ञानुसार पर्यूषण पर्व उस दिन मनाना मुश्किल होगा। राजा ने दूसरे दिन पर्व मनाने की अनुज्ञा माँगी। आर्य कालक ने कहा कि तिथि का अतिक्रम नहीं हो सकता अतः पूर्व दिन को–चतुर्थी को–पर्यूषण पर्व मनाओ और उस दिन विधिपूर्वक श्रमणों को आहार भी दो। इस तरह प्रसंगवश कालकाचार्य ने चतुर्थी मनाई और उस दिन से वह तिथि श्रमणपूजा-पर्व रूप से महाराष्ट्र में प्रचलित हुई।

जैसे पहले कहा गया है, सिर्फ प्रभावक आचार्य ही ऐसे निर्णय दे सकते हैं, जो युगप्रधान आचार्य हो, बड़े श्रुतधर हों और यहाँ भी तिथिनिर्णय का प्रसंग होने से यह ज्योतिषशास्त्र–मुहूर्त्त और निमित्त–को जाननेवाले आर्यकालक के जीवन की घटना ही हो सकती है। फिर यह सुप्रतीत है कि नं. ५ की गर्दभराजोच्छेद वाली घटना में बलमित्र-भानुमित्र का निर्देश होने से नं. ५ और नं. ६ के आर्य कालक एक ही व्यक्ति हैं और इस तरह जैसे कि हम पीछे देख चुके हैं नं. ५, नं. ६, नं. ७ और नं. २ वाली घटनाओं के कालक, एक ही हैं। नं. ३ और ४ वाली घटनाओं के आर्य कालक अनुयोगकार हैं उनका और सुवर्ण भूमि जाने वाले (नं. ७) कालक का एक होना तो पहले ही देख चुके हैं। नं. १ वाली घटना विस्तार से आगे देखेंगे। अनुयोगकार कालक निमित्तज्ञानी हैं और नं. १ में यज्ञफल बतलाने वाले कालक भी समर्थ

निमित्तज्ञानी हैं। अतः वास्तव में घटना नं. १ से ७ के नायक एक ही आर्य कालक होंगे। यही युक्ति-संगत लगता है।

इसी ढंग से अन्वेषण करने का और इस प्रश्न का निराकरण करने का प्रयत्न मुनि कल्याणविजयजी ने भी किया। मुनि जी के खयाल से दो कालकाचार्य हुए। मगर जिस तर्क से वे दूसरे कालक के साथ भिन्न घटनाओं को जोड़ते हैं इसी तर्कपद्धति से वास्तव में एक ही कालक के साथ सब घटनाओं का सम्बन्ध सिद्ध होता है, उस कालक का समय कुछ भी हो।

एक से ज्यादा कालकाचार्य की समस्या की उपस्थिति बाद के ग्रन्थकारों के कारण और कालगणनाओं में होनेवाली गड़बड़ के कारण, खड़ी हुई है। मुनिजी के तर्क को और निर्णय को सविस्तार देखने के पहले हम यहाँ यह बतलाना चाहते हैं कि हमारा उक्त अनुमान मुनिजी की तर्कपद्धति से ही किया गया है। आप लिखते हैं– "गर्द्दभिल्लोच्छेदवाली घटना में यह लिखा है कि ये कालक ज्योतिष और निमित्तशास्त्र के प्रखर विद्वान थे। उधर पाँचवीं घटना काक के निमित्तशास्त्रध्ययन का ही प्रतिपादन करती है। इससे यह बात निर्विवाद है कि इन दोनों घटनाओं का सम्बन्ध एक ही कालकाचार्य से है।"[१] जब इसी तर्क से सब घटनायें एक ही कालक के जीवन की घटित होती हैं, तब कुछ घटनायें पहले कालकपरक और अन्य सब दूसरे कालकपरक मानना ऐसा मुनि जी का अनुमान युक्तिसंगत नहीं है।

सब घटनायें एक ही कालक के जीवन की हैं ऐसे निर्णय को दूसरी दृष्टि से भी पुष्टि मिलती है। हमने पहले बताया है उस तरह पहले विभाग के संदर्भों (निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, कहावली इत्यादि) को देखें तो कोई भी ग्रन्थकार दो कालक की हस्ती दिखलाते ही नहीं। उन सब संदर्भों की छानबीन करनी चाहिये। हरेक ग्रन्थकार भिन्न भिन्न विषय की चर्चा में, कालक के जीवन की एक या दो या तीन घटनायें देते हैं और हरेक ग्रन्थकार के मत से ये घटनायें एक ही कालक की हैं क्योंकि उन्होंने विरोधात्मक सूचन दिया

१. देखिये, मुनि कल्याणविजय, **आर्य कालक,** द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं० १९९०) पृ० ११५.

ही नहीं और न इनको ऐसी शंका उत्पन्न हो सकती थी। अब देखें कि प्राचीन ग्रन्थ में कौन सी घटना है—

१. दशाचूर्णि— इसमें घटना नं. ६–चतुर्थीकरण–मिलती है।

२. बृहत्कल्पभाष्य और चूर्णि— घटना नं. ७ और घटना नं. ५-गर्द्दभिल्लोच्छेद। इसके अलावा यवराजा, गर्दभ–युवराज और अडोलिया वाला कथानक (गर्दभ का गर्दभराजोच्छेद से सम्बन्ध है मगर उस वृत्तान्त में कालक का प्रसंग नहीं है)। यह यवराज और ग्रर्दभ वाला वृत्तान्त हमने यहाँ परिशिष्ट में दिया हैं, गर्द्दभिल्लो के विषय में आगे के संशोधन में पण्डितों की सुविधा के खयाल से।

३. पञ्चकल्पभाष्य और चूर्णि— घटना नं० ३-निमित्तपठन, और घटना ४–अनुयोग ग्रन्थादि निर्माण।

४. उत्तराध्ययन निर्युक्ति और चूर्णि— घटना नं. ७– अविनीत शिष्य परिहार, सुवर्णभूमि गमन; और घटना नं. २– निगोद व्याख्यान।

५. निशीथचूर्णि— घटना नं० ५– गर्द्दभिल्लोच्छेद और घटना नं. ६--चतुर्थीकरण।

६. व्यवहार-चूर्णि— आर्य कालक उज्जैन में शकों को लाये ऐसा उल्लेख है अतः वह घटना नं. ५ से सम्बन्ध रखती है।

७. आवश्यक चूर्णि— घटना नं. १–दत्त के सामने यज्ञपलकथन।

८. कहावली— घटना नं. ५–गर्द्दभोच्छेद; घटना नं. ६–चतुर्थीकरण; घटना नं. ७–अविनीत शिष्यपरिहार, सुवर्णभूमिगमन; घटना नं. १–कालक और दत्तराजा।

अब जब पञ्चकल्पभाष्य के अनुसार नं. ३ और ४ वाले कालक एक हैं, उत्तराध्ययन निर्युक्ति के अनुसार नं. ७ और नं. २ वाले एक हैं, और जब नं. ७ वाली घटना का नं. ३ और नं. ४ के अनुयोग ग्रन्थों से सम्बन्ध है तब नं. ३, ४, ७ और २– ये सब घटनाएँ एककालकपरक होती हैं। निशीथचूर्णि के अनुसार नं. ५ और नं. ६ वाले आर्यकालक एक हैं। और बृहत्कल्पभाष्य के अनुसार नं. ५ और नं. ७ वाले एक हैं, अतः नं. ५, ६ और नं. ७ वाले कालक तो एक हैं ही। उत्तराध्ययननिर्युक्ति और चूर्णि के मत से नं. ७ और

न० २ वाले एक हैं अतः ५, ६, ७, और २ वाले एक ही कालक है फिर नं. ३, ४, और ७ वाले कालक हैं वह तो स्पष्ट है।[1] मुनिश्री कल्याणविजयजी को यह मंजूर है और कहावली के अनुसार, नं. ५, नं. ६, नं. ७ और नं. १ वाले कालक एक हैं। अतः इस विभाग के ग्रन्थों के इन ग्रन्थकारों के खयाल में घटनाओं नं. १ से घटना नं. ७ वाली सब घटना वाले कालकाचार्य एक ही होंगे।

वह कालक कब हुए? मुनिश्री कल्याणविजयजी के मत से दो कालकाचार्य हुए– पहले निर्वाण संवत् ३०० से ३७६ तक में, इनका जन्म नि. सं. २८० में, दीक्षा नि. सं. ३०० में, युगप्रधानपद नि. सं. ३३५ में और स्वर्गवास नि. सं. ३१६ में। उनके जीवन की दो घटनाएँ : घटना नं. १– यज्ञफल कथन, और घटना नं. २–निगोदव्याख्यान।[2]

मुनिजी के मत से, दूसरे कालक के जीवन में घटना ३ से ७ हुई और वे घटनायें इस क्रम से हुई :- घटना ३ (निमित्त-पठन), वीर निर्वाण संवत् ४५३ से पहले ; घटना ४ (अनुयोग-निर्माण), नि. सं. ४५३ से पहले ; घटना ५ (गर्द्दभिल्लोच्छेद), नि. सं. ४५३ में ; घटना ६ (चतुर्थी पर्यूषण), नि. सं. ४५१ से ४६५ के बीच में ; घटना १ (अविनीत-शिष्य-परिहार), नि. सं. ४५१ के बाद और ४६५ के पहले[3]।

आप लिखते हैं–जहाँ तक हम जान सके हैं, उपर्युक्त सात घटनाओं के साथ दो ही व्यक्तियों का सम्बन्ध है–प्रज्ञापनाकर्ता श्यामार्य और सरस्वती-भ्राता आर्य कालक। निगोद-पृच्छा सम्बन्धी घटना, जो कालक-कथाओं में चौथी घटना कही गई है, हमारी समझ में आर्य रक्षित के चरित्र का अनुकरण है। परन्तु इस विषय में निश्चित मत देना दुस्साहस होगा क्योंकि "उत्तराध्ययन-निर्युक्ति" में

---

१. अविनीतिशिष्य-परिहार (और सुवर्णभूमिगमन) वाली घटना और निमित्त पठन और अनुयोग निर्माणवली घटना को छानबीन करके मुनिश्री लिखते हैं–इन दोनों घटनाओं का आन्तरिक रहस्य एक ही है और वह यह कि कालक के शिष्य उनके काबू में न थे। इस खयाल को लेकर मुनिजी ने भी बताया है कि ये घटनायें एक ही कालक के जीवन की हैं। – **द्विवेदी अभिनंदन–ग्रन्थ,** पृ. ११५.

२. **वही,** पृ० ११६-११७.

३. **वही,** पृ० ११६-११७.

एक गाथा हमें उपलब्ध होती है, जिसका आशय यह है– उज्जयिनी में कालक क्षमाश्रमण थे और सुवर्णभूमि में सागर श्रमण। (कालक सुवर्णभूमि गये, और इन्द्र ने आकर) शेष आयुष्य के विषय में पूछा। (तब कालक ने कहा) आप इन्द्र हैं। XXX इस वर्णन से यह तो मानना पड़ेगा कि कालक के पास इन्द्रागमन-सम्बन्धित बात भी प्राचीन है।[१] उपर्युक्त घटना से यह भी जाना जाता है कि सागर के दादा-गुरु दूसरे आर्य कालक के साथ इस घटना का सम्बन्ध है। परन्तु हम पहले ही कह चुके हैं कि युगप्रधान-स्थविरावली में "श्यामार्य" नामक प्रथम कालक को निगोद व्याख्याता कहा है। ऐसी दशा में निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि निगोदव्याख्याता कालकाचार्य पहले थे या दूसरे।"[२]

मुनिजी के उक्त विधान में वास्तव में आखरी वाक्य की जरूरत ही नहीं, क्योंकि निगोद व्याख्यान का सम्बन्ध श्यामार्य से हो सकता है अथवा आर्य रक्षित से। हमें यह भी याद रखना चाहिये कि इस घटना में इन्द्र अपना शेष आयुष्य पूछता है जो वास्तव में ज्योतिष और निमित्तशास्त्र का विषय है। सुवर्णभूमि जानेवाले और अनुयोग निर्माता आर्य कालक एक ही थे और वे निमित्तज्ञानी थे यह तो हम देख चुके हैं और **घटना ३ से घटना ७ वाले कालक एक ही हैं वह तो मुनिजी को भी मंजूर है। अब अगर हम सिद्ध कर सकें कि अनुयोग निर्माता आर्य कालक वह श्यामार्य ही हो सकते हैं तब घटना ३ से घटना ७ वाले कालक को भी श्यामार्य मानना पड़ेगा।** और उत्तराध्ययन निर्युक्ति-गाथा–(जो प्राचीन होने से ज्यादा विश्वसनीय होनी चाहिये) भी सच्ची सिद्ध होगी।

हम कह चुके हैं कि आर्य रक्षित ने अनुयोग-पृथक्त्व किया और अनुयोग के चार भाग किये। आर्य रक्षित का समय है आर्य वज्र के बाद का, मतलब कि नि० सं० ५८४ से ५९७ आसपास,[३] ई० स० ५७ से ७० आसपास। आर्य कालक ने लोकानुयोग, गण्डिकानुयोग, प्रथमानुयोग आदि का निर्माण किया जैसा कि पञ्चकल्पभाष्य में कहा गया है। इसके बाद ही अनुयोग पृथक्त्व से पूर्ववर्ती होने का

---

१. वास्तव में इस घटना का आर्य रक्षित से सम्बन्ध तब जोड़ा गया जब कालक के अनुयोग का स्थान आर्य रक्षित के अनुयोग-पृथक्त्व ने लिया। अतः उत्तराध्ययन-निर्युक्ति-गाथा में शंका रखने की आवश्यकता नहीं।

२. **द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ,** पृ० ११४।

३. देखिये, **पट्टावली समुच्चय,** सिरि दुसमाकाल-समणसंघ-थयं, पृ० ११-१८.

एक और प्रमाण भी मिलता है। इस विषय में मुनि श्री कल्याणविजयजी ने लिखा है कि— **नन्दीसूत्र में मूलप्रथमानुयोग और गण्डिकानुयोग का उल्लेख मिलता है। वहाँ प्रथमानुयोग के साथ लगा हुआ मूल शब्द नन्दी के रचनाकाल में दो प्रथमानुयोगों के अस्तित्व की गूढ़ सूचना देता है।** यद्यपि टीकाकार इस मूल शब्द का प्रयोग तीर्थंकरों के अर्थ में बताते हैं, तथापि वस्तुस्थिति कुछ और ही मालूम होती है।[१] आवश्यक-निर्युक्ति आदि जैन सिद्धान्त-ग्रन्थों में यह बात स्पष्ट लिखी मिलती है कि आर्य रक्षित सूरिजी ने अनुयोग को चार विभागों में बाँट दिया था।[२] जिसके एक विभाग का नाम धर्मकथानुयोग था। इस धर्मकथानुयोग में उत्तराध्ययन, ऋषिभाषित आदि सूत्रों को रखा था।[3]। परन्तु नन्दीसूत्र में मूलप्रथमानुयोग का जो वर्णन दिया है वह इस आर्यरक्षितवाले धर्मकथानुयोग के साथ मेल नहीं खाता[४]। ये नाम कालक के अनुयोगों के हैं, आर्यरक्षित के चार अनुयोग भिन्न भिन्न नामों से दिखाये गये हैं।

क्रमशः

---

१. नन्दीसूत्र का यह उल्लेख ऐसा है :—

से किं तं अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते।
तं जहा – मूलपढमाणुओगे, गंडियाणुओगे य ।।

से किं तं मूलपढमाणुओगे? मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा देवगमणाइं आउं चवणाइं जन्मणाणि अभिसेआ रायवरसिरीओ पव्वज्जाओ.....एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिआ, ते त्तं मूलपढमाणुओगे, से किं तं गंडिआणुओगे? २ कुलगरगंडिआओ तिथत्यरगंडिआओ चक्कवट्टिगंडिआओ दसारगंडिआओ बलदेवगंडिआओ, वासुदेवगंडिआओ गणधरगंडिआओ भद्दबाहुगंडिआओ तवोकम्मगंड़िआओ......से तं गंडिआणुओगे, से तं अणुओगे।

—**नन्दीसूत्र** (आगमोदय-समिति, सूरत) सू, ५६, पृ. २३६-२३८ और पृ. २४१ पर की टीका।

२. यह गाथा ऐसी है—देवंदवंदिएहि महाणुभागेहि रक्खिअज्जेहिं।

जुगमासज्ज विभत्तो अणुओगो तो कओ चउहा।।

—आवश्यक हारिभद्रयिवृत्ति, पृ. २९६, निर्युक्ति गाथा, ११४

३. देखो – कालियसुयं च इसिभासियाइं तइओ य सूरपण्णत्ती।

सव्वो य दिट्ठिवाओ चउत्थओ होइ अणुओगो।।

— आवश्यकसूत्र, हारिभद्रीयवृत्ति, पृ. ३०९, मूलभाष्यगाथा, १२४.

आर्यरक्षितकृत चार अनुयोगों के नाम हैं-चरणकरणानुयोग, धर्मकथानुयोग, कालानुयोग औरद्रव्यानुयोग।

४. **द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ,** पृ. १०६-१०७। मुनिजी लिखते हैं- यद्यपि आवश्यकमूलभाष्य में चरणकरणानुयोग पहला कहा गया है और धर्मकथानुयोग दूसरा, तथापि इस कथानुयोग को प्रथमानुयोग कहने से यह ज्ञात होता है कि पहले के चार अनुयोगों में धर्मकथानुयोग का नंबर पहला होगा।

— **वही,** पृ. १०६, पादनोंध ३

प्रतिभामूर्ति सिद्धसेन दिवाकर

श्रीयुत पं. सुखलालजी

भारतीय दर्शन अध्यात्मलक्षी है। पश्चिम के दर्शनों की तरह वे मात्र बुद्धि प्रधान नहीं है। उनका उद्‌गम ही आत्मशुद्धि की दृष्टि से हुआ है। वे आत्म तत्त्व को और उसकी शुद्धि को लक्ष्य में रखकर ही बाह्य जगत का भी विचार करते हैं। इसलिए आस्तिक भारतीय दर्शनों के मौलिक तत्त्व एक से ही हैं। जैन दर्शन का स्रोत भगवान् महावीर और पार्श्वनाथ के पहले से ही किसी न किसी रूप में चला आ रहा है यह वस्तु इतिहास सिद्ध है। जैन दर्शन की दिशा चारित्र-प्रधान है जो कि मूल आधार आत्म-शुद्धि की दृष्टि से विशेष संगत है। उसमें ज्ञान, भक्ति आदि तत्त्वों का स्थान अवश्य है पर वे सभी तत्त्व चारित्र-पर्यवसायी हों तभी जैनत्व के साथ संगत हैं। केवल जैन परंपरा में ही नहीं बल्कि वैदिक, बौद्ध आदि सभी परंपराओं में जब तक आध्यात्मिकता का प्राधान्य रहा या वस्तुतः उनमें आध्यात्मिकता जीवित रही तब तक उन दर्शनों में तर्क और वाद का स्थान होते हुए भी उसका प्राधान्य न रहा। इसीलिए हम सभी परम्पराओं के प्राचीन ग्रन्थों में उतना तर्क और बाद ताण्डव नहीं पाते हैं जितना उत्तरकालीन ग्रन्थों में।

आध्यात्मिक और त्याग की सर्वसाधारण में निःसीम प्रतिष्ठा जम चुकी थी। अतएव उस आध्यात्मिक पुरुष के आस पास सम्प्रदाय भी अपने आप जमने लगते थे। जहाँ सम्प्रदाय बने कि फिर उनमें मूल तत्त्व में भेद न होने पर भी छोटी छोटी बातों में और अवान्तर प्रश्नों में मतभेद और तज्जन्य विवादों का होता रहना स्वाभाविक है। जैसे जैसे सम्प्रदायों की नींव गहरी होती गई और वे फैलने लगे वैसे वैसे उनमें परस्पर विचार-संघर्ष भी बढ़ता चला। जैसे अनेक छोटे बड़े राज्यों के बीच चढ़ा-उतरी का संघर्ष होता रहता है। राजकीय संघर्षों

ने यदि लोकजीवन में क्षोभ किया है तो उतना ही क्षोभ बल्कि उससे भी अधिक क्षोभ साम्प्रदायिक संघर्ष ने किया है। इस संघर्ष में पड़ने के कारण सभी आध्यात्मिक दर्शन तर्क प्रधान बनने लगे। कोई आगे तो कोई पीछे पर सभी दर्शनों में तर्क और न्याय का बोलबाला शुरु हुआ। प्राचीन समय में जो आन्वीक्षिकी एक सर्व साधारण खास विद्या थी उसका आधार लेकर धीरे धीरे सभी सम्प्रदायों ने अपने दर्शन के अनुकूल आन्वीक्षिकी की रचना की। मूल आन्वीक्षिकी विद्या वैशेषिक दर्शन के साथ घुल मिल गई पर उसके आधार से कभी बौद्ध-परम्परा ने तो कभी मीमांसकों ने, कभी सांख्य ने तो कभी जैनों ने, कभी अद्वैत वेदान्त ने तो कभी अन्य वेदान्त परम्पराओं ने अपनी स्वतंत्र आन्वीक्षिकी की रचना शुरू कर दी। इस तरह इस देश में प्रत्येक प्रधान दर्शन के साथ एक या दूसरे रूप में तर्कविद्या का सम्बन्ध अनिवार्य हो गया।

जब प्राचीन आन्वीक्षिकी का विशेष बल देखा तब बौद्धों ने संभवतः सर्व प्रथम अलग स्वानुकूल आन्वीक्षिकी का खाका तैयार करना शुरु किया। संभवतः फिर मीमांसक ऐसा करने लगे। जैन सम्प्रदाय अपनी मूल प्रकृति के अनुसार अधिकतर संयम, त्याग, तपस्या आदि पर विशेष भार देता आ रहा था; पर आसपास के वातावरण ने उसे भी तर्कविद्या की ओर झुकाया। जहाँ तक हम जान पाये हैं, उससे मालूम पड़ता है कि विक्रम की ५वीं शताब्दी तक जैन दर्शन का खास झुकाव स्वतंत्र तर्क विद्या की ओर न था। उसमें जैसे जैसे संस्कृत भाषा का अध्ययन प्रबल होता गया वैसे वैसे तर्क विद्या का आकर्षण भी बढ़ता गया। पाँचवीं शताब्दी के पहले के जैन वाङ्मय और इसके बाद के जैन वाङ्मय में हम स्पष्ट भेद देखते हैं। अब देखना यह है कि जैन वाङ्मय के इस परिवर्तन का आदि सूत्रधार कौन है? और उसका स्थान भारतीय विद्वानों में कैसा है?

आदि जैन तार्किक

जहाँ तक मैं जानता हूँ, जैन परम्परा में तर्क विद्या का और तर्क प्रधान संस्कृत वाङ्मय के आदि प्रणेता हैं सिद्धसेन दिवाकर। मैंने दिवाकर के जीवन और

कार्यों के सम्बन्ध में[१] अन्यत्र विस्तृत ऊहापोह किया है; यहाँ तो यथासंभव संक्षेप में उनके व्यक्तित्व का सोदाहरण परिचय कराना है।

सिद्धसेन का सम्बन्ध उनके जीवन कथानकों के अनुसार उज्जैनी और उसके अधिपति विक्रम के साथ अवश्य रहा है, पर वह विक्रम कौन सा यह एक विचारणीय प्रश्न है। अभी तक के निश्चित प्रमाणों से जो सिद्धसेन का समय विक्रम की पाँचवीं और छठी शताब्दी का मध्य जान पड़ता है, उसे देखते हुए अधिक संभव यह है कि उज्जैनी का वह राजा चन्द्रगुप्त द्वितीय या उसका पौत्र स्कन्दगुप्त होगा। जो कि विक्रमादित्य रूप से प्रसिद्ध रहे।[*]

सभी नये पुराने उल्लेख यही कहते हैं कि सिद्धसेन जन्म से ब्राह्मण थे। यह कथन बिलकुल सत्य जान पड़ता है, क्योंकि उन्होंने प्राकृत जैन वाङ्मयों का संस्कृत में रूपान्तरित करने का जो विचार निर्भयता से सर्व प्रथम प्रकट किया वह ब्राह्मण-सुलभ शक्ति और रुचि का द्योतक है। उन्होंने उस युग में जैन दर्शन तथा दूसरे दर्शनों को लक्ष्य करके जो अत्यन्त चमत्कारपूर्ण संस्कृत पद्यबद्ध कृतियोंकी देन दी है वह भी जन्मसिद्ध ब्राह्मणत्व की ही द्योतक है। उनकी जो कुछ थोड़ी बहुत कृतियाँ प्राप्य हैं उनका एक एक पद और वाक्य उनकी कवित्व विषयक, तर्क विषयक, और समग्र भारतीय दर्शन विषयक तलस्पर्शी प्रतिभा को व्यक्त करता है।

आदि जैन कवि एवं आदि जैन स्तुतिकार

हम जब उनका कवित्व देखते हैं तब अश्वघोष, कालिदास आदि याद आते हैं। ब्राह्मण-धर्म में प्रतिष्ठित आश्रम व्यवस्था के अनुगामी कालिदास ने लग्नभावना का औचित्य बतलाने के लिये लग्नकालीन नगर प्रवेश का प्रसंग लेकर उस

---

१. देखिए गुजरात विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित सन्मतितर्क का गुजराती भाषान्तर, भाग ६, तथा उसी का इंग्लिश भाषान्तर, श्वेताम्बर जैन कोन्फ्रन्स, पायधुनी बोम्बे, द्वारा प्रकाशित।

* लेखक के विचार से कुछ विद्वान असहमत है। सिद्धसेन दिवाकर का समय विक्रम संवत् के संस्थापक विक्रमादित्य के समकालीन मानते है जो अधिक उपयुक्त है।

प्रसंग से हर्षोत्सुक स्त्रियों के अवलोकन कौतुक का जो मार्मिक शब्द-चित्र खींचा है वैसा चित्र अश्वघोष के काव्य में और सिद्धसेन की स्तुति में भी है। अन्तर केवल इतना ही है कि अश्वघोष और सिद्धसेन दोनों श्रमणधर्म में प्रतिष्ठित एक मात्र त्यागाश्रम के अनुगामी हैं इसलिए उनका वह चित्र वैराग्य और गृहत्याग के साथ मेल खाए ऐसा है। अतः उसमें बुद्ध और महावीर के गृहत्याग से खिन्न और उदास स्त्रियों की शोकजनित चेष्टाओं का वर्णन है ना कि हर्षोत्सुक स्त्रियों की चेष्टाओं का। तुलना के लिए नीचे के पद्यों को देखिए।

अपूर्वशोकोपनतल्कमानि नेत्रोदकल्किन्नविशेषकाणि।
विविक्तशोभान्यवलाननानि विलापदाक्षिण्यपरायणानि।।
मुग्धोन्मुखाक्षाण्युपदिष्टवाक्यसंदिग्धजल्पानि पुरःसराणि।
बालानि मार्गाचरणक्रियाणि प्रलंबवस्त्रान्तविकर्षणानि।।
अकृत्रिमस्नेहमयप्रदीर्घदीनेक्षणाः साश्रुमुखाश्व पौराः।
संसारसात्म्यज्ञजनैकबन्धो न भावशुद्धं जगृहुर्मनस्ते।।

(सिद्ध० ५-१०, ११, १२)

अतिप्रहर्षादथ शोकमूर्छिताः कुमारसंदर्शनलोललोचनाः।
गृहाद्विनिश्चकमुराशया स्त्रियः शरत्पयोदादिव विद्युतश्चलाः।।
विलम्बकेश्यो मलिनांशुकाम्बरा निरञ्जनैर्बाष्पहतेक्षणैर्मुखैः।
स्त्रियों न रेजुर्मृजया विनाकृता दिवीव तारा रजनीक्षयारुणाः।।
अरक्तताभ्रैश्चरणैरनूपुरैरकुण्डलैरार्जवकन्धरैर्मुखै :।
स्वभावपीनैर्जघनैरमेखलैरहारयोक्त्रैर्मुषितैरिव स्तनैः ।।

(अश्व० बुद्ध० सर्ग ८-२०, २१, २२)

तस्मिन् मुहूर्ते पुरसुन्दरीणामीशानसंदर्शनलालसानाम्।
प्रसादमालासु बभूवुरित्थं त्यक्तान्यकार्याणि विचेष्टितानि।।५६
विलोचनं दक्षिणमञ्चनेन संभाव्य तद्वञ्चितवामनेत्रा।
तथैव वातायनसंनिर्ष ययौ शलाकामपरा वहन्ती ।। ५९
तासां मुखैरासवगन्धगभैर्व्याप्तान्तराः सान्द्रकुतूहलानाम्।
विलोलनेत्रभ्रमरैर्गवाक्षाः सहस्त्रपन्नाभरणा इवासन् ।।६२

(कालि० कुमार० सर्ग ७.)

सिद्धसेन ने गद्य में कुछ लिखा हो तो पता नहीं है। उन्होंने संस्कृत में बत्तीस बत्तीसियाँ रची थीं, जिनमें से इक्कीस अभी लभ्य हैं। उनका प्राकृत में रचा सम्मति प्रकरण जैनदृष्टि और जैन मन्तव्यों को तर्क शैली से स्पष्ट करने तथा स्थापित करनेवाला जैन वाङ्मय में सर्व प्रथम ग्रन्थ है। जिसका आश्रय उत्तरवर्ती सभी श्वेताम्बर दिगम्बर विद्वानों ने लिया है।

संस्कृत बत्तीसियों में शुरू की पाँच और ग्यारहवीं स्तुतिरूप है। प्रथम की पाँच में महावीर की स्तुति है जब कि ग्यारहवीं में किसी पराक्रमी और विजेता राजा की स्तुति है। ये स्तुतियाँ अश्वघोष समकालीन बौद्ध स्तुतिकार मातृचेट के अध्यर्धशतक, चतुःशतक तथा पश्चाद्वर्ती आर्यदेव के चतुःशतक की शैली की याद दिलाती हैं। सिद्धसेन ही जैन परम्परा का आद्य संस्कृत स्तुतिकार है। आचार्य हेमचन्द्र ने जो कहा है क्क सिद्धसेनस्तुतयो महार्था अशिक्षितालापकला क्क चैषा वह बिलकुल सही है। स्वामी समन्तभद्र का स्वयंभूस्तोत्र जो एक हृदयहारिणी स्तुति है और युक्तयनुशासन नामक दो दार्शनिक स्तुतियां ये सिद्धसेन की कृतियों का अनुकरण जान पड़ती हैं। हेमचन्द्र ने भी उन दोनों का अपनी दो बत्तीसियों के द्वारा अनुकरण किया है।

बारहवीं शदीं के आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में उदाहरण रूप से लिखा है कि अनुसिद्धसेन कवयः। इसका भाव यदि यह हो कि जैन परम्परा के संस्कृत कवियों में सिद्धसेन का स्थान सर्व प्रथम है (समय की दृष्टि से और गुणवत्ता की दृष्टि से अन्य सभी जैन कवियों का स्थान सिद्धसेन के बाद आता है।) तो वह कथन आज तक के जैनवाङ्मय की दृष्टि से अक्षरशः सत्य है। उनकी स्तुति और कविता के कुछ नमूने देखिये—

स्वयंभुवं भूतसहस्रनेत्रमनेकमेकाक्षरभावलिंगम।
अव्यक्तमव्याहतविश्वलोकमनादिमध्यान्तमपुण्यपापम्।।
समन्तमर्वाक्षगुणं निरक्षं स्वयंप्रभं सर्वगतावभासम्।
अतीतसंख्यामनंतकल्पमचिन्त्यमाहात्म्यमलोकलोकम्।।
कुहेतुतर्कोपरतप्रपञ्चसद्भावशुद्धाप्रतिवादवादम्।
प्रणम्य सच्छासनवर्धमानं स्तोष्ये यतीन्द्रं जिनवर्धमानम्।।

स्तुति का यह प्रारम्भ उपनिषद् की भाषा और परिभाषा में विरोधालंकार गर्भित है।

एकान्तनिर्गुणभवान्तभुपेत्य सन्तो यन्तार्जितानपि गुणान् जहति क्षणेन।
क्लीबादरस्त्वयि पुनर्व्यसनोल्पणानि भुंक्ते चिरं गुणफलानि हितापनष्टः।।

इसमें सांख्य परिभाषा के द्वारा विरोधाभास गर्भित स्तुति है।

क्वचिन्नियतिपक्षपातगुरु गभ्यते ते वचः,
स्वभावनियताः प्रजाः समयतंत्रवृत्ताः क्वचित्।
स्वयं कृतभुजः क्वचित् परकृतोपभोगाः पुन–
र्नवा विषदवाददोषमलिनोऽस्यहो विस्मयः।।

इसमें श्वेताम्बर उपनिषद् के भिन्न भिन्न कारणवाद के समन्वय द्वारा वीर के लोकोत्तरत्व का सूचन है।

कुलिशेन सहस्रलोचनः सविता चांशुसहस्रलोचनः।
न विदारयितुं यदीश्वरो जगतस्तभ्दवता हतं तमः।।

इसमें इन्द्र और सूर्य से उत्कृष्टत्व दिखाकर वीर के लोकोत्तरत्व का व्यंजन किया है।

न सदःसु वदन्नशिक्षितो लभते वक्तृविशेषगौरवम्।
अनुपास्य गुरुं त्वया पुनर्जगदाचार्यकमेव निर्जितम्।।

इसमें व्यतिरेक के द्वारा स्तुति की है कि हे भगवन्! आपने गुरुसेवा के विना किये भी जगत का आचार्य पद पाया है जो दूसरों के लिए संभव नहीं है।

उदधाविव सर्वसिन्धवः समुदीर्णास्त्वयि सर्वदृष्टयः।
न च तासु भवानुदीक्ष्यते प्रविभक्तासु सरित्स्विवोदधिः।।

इसमें सरिता और समुद्र की उपमा के द्वारा भगवान् में सब दृष्टियों के अस्तित्व का कथन है जो अनेकान्तवाद की जड़ है।

क्रमशः

सिंहल की राजकन्या

सुदर्शना

आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.

इस तरह राजा ! मैंने तुम्हें संक्षेप से नव तत्त्व का स्वरूप समझाया। इसे अच्छी तरह अध्ययन कर विस्तार से समझना चाहिये। इसी से स्वरूप का बोध, बोध से श्रृद्धा को बल और बल से ही पुरुषार्थ में अद्‌भुत उत्साह और चेतना का उद्‌भव होता है। जीव कर्म बन्धन से बचते हुए कर्म नाश का भव्य पुरुषार्थ कर लेता है।

यह सब बोध प्राप्त कर, लोक विरुद्ध से, व्यसनों से, विकथा से, जुआ आदि अनर्थों से अपने आपका रक्षण करना चाहिये । धर्म कार्य में निर्बल नहीं बनना चाहिये।

यों संक्षेप में धर्म ज्ञान की बातें कहीं। अब गृहस्थों की दिनचर्या के बारे में समझो। इसका आदर करने वाले महाभाग अल्प समय में ही संसार पार करने के पुरुषार्थ में सफलता प्राप्त करते हैं।

धर्मी सद्‌गृहस्थ दो घड़ी रात्रि शेष रहने पर-नमस्कार महामंत्र के स्मरण पूर्वक निद्रा छोड़-जागते हैं और शुभ परिणाम पूर्वक सोचते हैं कि आर्य देश, उत्तम धार्मिक कुल, देवगुरु धर्म की सामग्री-यह सब बड़े पुण्य से प्राप्त होते हैं, इन्हें व्यर्थ में बरबाद नहीं करनी चाहिए।

मेरी सारी दिनचर्या व कार्य व्यवस्था में कितनी प्रवृत्तियाँ आत्म हितकर हैं? धर्म में व आत्मा के हित में कितना प्रयत्न करता हूँ? कहाँ सफलता या विफलता मिलती हैं? क्या कारण है विफलता का? जो सफलता मिलती है उसमें कितना बढ़ावा शक्य हैं? विफलता दूर करने के क्या उपाय हैं? मैंने क्या उपाय किये?

मुझसे कहाँ गलतियाँ होती हैं? गलतियों का क्या कारण है? कहाँ से प्रेरणा मिलती है? कैसे होती है गलतियाँ? कैसे रोकी जाय? यह जो भूल-पाप हो जाते हैं उन्हें अवश्य दूर करना ही है। क्योंकि इससे कोई फायदा नहीं– साफ नुकसान और अपयश है। फिर परिणाम निश्चित है, कोई टाल नहीं सकता और मुझे ही भुगतना है।

मेरे परमात्मा–गुरु कौन हैं? कैसे उत्तम हैं? वे क्या फरमाते हैं? जीवन सफल करने की दिशा में मुझे कौन सहयोग देते हैं? किन की कौन और कैसे लोगों की संगत में मैं हूँ? उनसे मुझे आत्मिक लाभ है या नुकसान?

मेरे कितने सारे दोष हैं !! इन दोषों को जानकर भी उन्हें दूर करने के लिए मैंने कौन से प्रयत्न किये? ये गलतियां मेरे लिये परेशानी ही पैदा करती हैं। अपयश और अनादर ही दिलवाती हैं। कोई तो फायदा नहीं होता। आज तो कुछ भी हो जाय, यह गलती तो करनी ही नहीं है। इत्यादि चिंतन एवं निर्णय करके प्रतिक्रमण करना चाहिए। सूर्योदय होने पर शुद्ध श्वेत वस्त्र पहनकर उत्तम स्वद्रव्य से परमोपकारी अरिहंत देव की पूजा–चैत्यवंदन कर प्रभु समक्ष पच्चक्खाण करना चाहिये। फिर उपाश्रय में गुरुमहाराज को विधिपूर्वक वंदनकर गुरुओं का आदरमान रखते हुए बैठकर धर्म उपदेश श्रवण करना, फिर गुरु महाराज के समक्ष पच्चक्खाण कर घर आना चाहिये और अनिषिद्ध व्यापार आदि से अर्जित न्याय संपन्न धन से जीविका का निर्वाह करना चाहिये।

मध्याह्न में अष्ट प्रकारी पूजा कर नैवेद्य धर, गुरु महाराज को बहोरा कर–सहधर्मी की भक्ति कर-दीन-दुःखियों को सहायकर फिर शुद्ध सात्विक आहार शांत चित्त से जीमना चाहिये। रात्रि के पूर्व ही आहार का त्याग कर लेना चाहिये। फिर जिनमंदिर जाकर धूप दीप आरती पूजा कर अरिहंत देव की साक्षी में चउविहार या तिविहार का पच्चक्खाण कर-गुरु-वंदन पच्चक्खाण कर, गुरु साक्षी में शाम का प्रतिक्रमण करना चाहिये। गुरुओं की भक्ति-सेवा सुश्रुषा कर घर आकर परिवार के लोगों को धर्म कार्य में पुरुषार्थ करने का उपदेश देना तथा धर्मकथादि सुनाना चाहिये। प्रायः विषयों से विरक्त रहना और पर्व तिथि-कल्याणकारी विशिष्ठ दिनों में ब्रह्मचर्य पालना चाहिये। अरिहंत ादि चार का अवश्य शरण कर शयन करना । चारित्र-संयम के मनोरथ करना,

चारित्रवान महापुरुषों को याद करना और नमस्कार महामंत्र का स्मरण करते-करते शांति से सो जाना चाहिये।

हे राजन् ! निरंतर ऐसा उत्तम जीवन जीने वाला और परमात्मा जिनेन्द्रदेव के बताये तत्त्व और मार्ग पर निष्ठा-श्रद्धा रखने वाला मनुष्य शीघ्र ही मोक्ष के समीप पहुँचता है।

इस प्रकार गुरु महाराज के गहन और सारगर्भित उपदेश को सुनकर सब ही धर्म की महिमा को समझे। सभी जीवन की सार्थकता व्यर्थता के बारे में पृथक्करण करने लगे। ज्ञानी गुरु महाराज और उनकी कृपा से अपने आप को धन्य मानने लगे।

सभी ने अपने शक्ति-भाव भक्ति के अनुसार व्रत नियम लिये। राजा-रानी ने गृहस्थ धर्म स्वीकृत किया। सुदर्शना सुन्दरी ने बारह व्रत के अतिरिक्त सर्वथा अब्रह्म का त्यागकर ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकारा। सारी सभा ने इनके त्याग का खूब खूब अभिनंदन किया।

दूसरे भी काफी स्त्री-पुरुषों ने व्रत-नियम लिए। कइयों ने मांस, मदिरा, जुआ, आदि व्यसनों का त्याग किया। चंद्रसेठ तथा सोमसेठ ने बारह व्रत लिये। यो अनेकों पर उपकार कर उन्हें अपने व्रत पालन में सावधान रहने का उपदेश देकर वे मुनिश्रेष्ठ आकाश मार्ग से श्री नंदीश्वर द्वीप के शाश्वत तीर्थ की यात्रा को चल दिये।

राजा ने सुदर्शना के शिक्षक उपाध्याय को उदारता पूर्वक द्रव्य आदि दे सम्मान पूर्वक विदा दी।

सभा बरखास्त होने के बाद राजा-रानी, शियलवती, ऋषभदत्त सेठ, चन्द्रश्रेष्ठी आदि बैठे थे। नगर में एवं राजमहल के परिसर में सुदर्शना, जैन-धर्म और धर्मगुरु की ही चर्चा चल पड़ी थी।

राजा और ऋषभदत्त सेठ भी धर्म के बारे में बातचीत कर रहे थे। इतने में सुदर्शना ने वापस विनम्रता से कहा पिताजी ! मेरा इंतजाम करिये ! मेरा तो यहाँ से बिलकुल जी ही उचट गया है। जैसे भृगुकच्छ की भूमि पुकार रही है। मेरे लिए पल-पल यहाँ मुश्किल हो रहा हैं।

राजा-रानी आदि ने बहुत समझाया, जीवन की राह कितनी लम्बी और कठोर होती है, कैसे बड़े-बड़े लोगों के पैर भी लड़खड़ाते हैं ये सब जोरदार ढंग से बतलाया। किन्तु सारी बातों का सुदर्शना ने गम्भीरता व बढ़िया ढंग से उत्तर दिया। उसका निर्णय कोई उफान नहीं किन्तु जीवन की गहरी समझ और संसार की असलियत पर आधारित है यह उसने निश्चयपूर्वक पेश किया। उसने बताया कि यहाँ उसके मन को हताशा, चिन्ता और भय ही मिलेगा- भृगुकच्छ में मन सदा आनन्दित, निश्चित और निर्भय रहेगा। क्योंकि देव-गुरु की समस्त सामग्री से मन तृप्त और आत्मा सदा सुप्रसन्न रहेगी।

राजा ने अपनी परेशानी बताते हुए सार्थवाह को कहा धनेश! यह सब कैसे हो सकता है? सुदर्शना हमको बेहद प्यारी है। उसके बिना हमारे हाल तो खैर एक बाजू रखिये, लेकिन घर के बाहर क्या है? क्या होता है? क्या हो सकता है? यह भोली लड़की यह सब क्या जाने? न इसको धूप-छाँव का पता है, न सुःख-दुःख का ठिकाना। न मान-अपमान मालूम है, न अपने पराये का ख्याल। सदा सुख में पली है और महल में बड़ी हुई है। पारिजात के फूल की तरह मासूम और नाजुक ये एक अनजान धरती प्रर जाना और वहाँ रहना चाहती है। पागलपन नहीं तो क्या है?

ओह पिताजी! मैं आपको कैसे बताऊँ कि मैंने सुख-दुःख देखे हैं। मान-अपमान सहे हैं। अपने बेगाने भी मैं खूब जानती हूँ। ये तो सारी बचकानी और बेहूदी बातें हैं जिनका कोई अर्थ ही नहीं है। मेरा अनुभव बड़ा गहरा है। अब मैं चूक गयी तो कहीं की नहीं रहूंगी। नहीं ! आप मुझे अपने हित से नहीं रोकिये, नहीं....... नहीं....... मैं यहाँ अब तो नहीं रह सकती। मुझे भरुच-भृगुकच्छ जाना ही है।

देखिये देखिये सेठजी! मेरी बिटिया कितनी पीड़ित है। इसकी बात नहीं मानते तो ये कितनी दुःखी होती है और अगर इसकी बात मान लें तो हम सब ही दुःखी होते हैं। करें तो क्या करें। सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि जवान लड़की को पराई भूमि में अकेली कैसे छोड़ी जाय?

महाराज! सुदर्शना अकेली नहीं हैं, मैं भी हूँ उसके साथ। मैं सदा उसके साथ रहूँगी। आपस में हम दोनों की धर्म भावना में वेग आयेगा। मैं भी

अपने ध्येय की ओर आगे-आगे बढ़ सकूंगी। शियलवती ने कहा। राजा रानी सब चौंक उठे। सुदर्शना आनन्द विभोर हो मेरी अच्छी मौसी! तुम कितनी अच्छी हो। अब हम दो नहीं बाईस हैं–अब हमें कौन रोक सकता है? कहकर गले लिपट गयी।

सेठजी बोले, राजाजी ! हमारी बात मानेंगे ?

हाँ, हाँ जरूर! यह भी कोई बात है पूछने की? आपके प्रताप से ही तो हम सबको धर्म की प्राप्ति हुई है। फिर आपकी बात तो बड़े काम की होगी।

तो देखिये, सुदर्शना को आप अबोध या अनजान मत मानिये, न ही इसे लड़की और भय चिन्ता का कारण। भव-भवांतर की अनुभूमित, समझ, ज्ञान, और परिणाम का ज्ञान इसके पास है। दुनिया की सारी धोखेबाजी और कपटलीला को इसने परख लिया है। इसे अब कोई ठग नहीं सकता है। इसके स्वयं में इतना सत्त्व है कि इसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। फिर गजब तो यह सुन्दरी-शियलवती कर रही हैं जो सुदर्शना के साथ रहने का फैसला कर चुकी है। इसमें तो दोनों को लाभ है। फिर तो हमारे महाराजा जितशत्रु स्वयं गुणवान, धर्मिष्ठ और धर्मकार्य में आदर्श अग्रणी तो हैं ही, ये शियलवती के मामाजी भी हैं। उसके हर कार्य में मैं सहयोगी बनूंगा। देव-गुरु की कृपा से मेरे पास भी काफी है, ये जब इतने ऊंचे भाव रखती है तो मुझे तो इस उम्र में अवश्य ही छुट्टी लेनी चाहिए। आप तो सारी फिक्र छोड़कर सुदर्शना को उसकी भावना के अनुकूल व्यवस्था कर दीजिए। आगे सब ठीक ही हो जायेगा।

सेठजी! आपकी बात सही है लेकिन कुमारी की मुझे बड़ी चिन्ता होती है। इसकी बात सरल या सहज नहीं है।

नहीं महाराज! दुनिया में मुश्किल और आसान कुछ भी नहीं है, एक के लिए जो कठिन होता है दूसरे को वहीं सरल पड़ता है। सुदर्शना तो खुद अपनी हिफाजत के लिए काफी है। वह जहाँ होगी वहाँ कभी कोई उपद्रव या अमंगल नहीं होगा।

राजाजी ! आप भी व्यर्थ में शंका और वहम करते हैं। धर्म तो सबसे सरल चीज है। आठ साल के सुकुमाल राजकुमार भी जिस मार्ग पर आसानी से चल सकते हैं, उसे आप कठिन कैसे फरमाते हैं।

दुष्कर तो दुनिया का रास्ता-संसार का मार्ग है। फिर मैं जो हूँ इसके साथ ! आप तो सारी फिक्र ही छोड़ दीजिए। मैं तो अनजान नहीं हूँ, वहाँ की भानजी हूँ भानजी ! अरी ! तू क्यों कुछ नहीं बोलती सुदर्शना।

हाँ मौसी, मैं तो कब से बोल रही हूँ, आप ही हैं कि खामोश बैठी सुन रही हो। वहाँ पहुँचते ही कितना अच्छा वातावरण और उत्तम साधन मिल जायेगा। राजा तो राजा वहाँ की प्रजा भी कितनी धार्मिक है। यहाँ से कमला धाय को साथ ले जायेंगे और वहाँ पहुँचते ही उसे यहाँ आने को बिदा कर देंगे। वह आँखों देखा सारा हाल आपको बता देगी। यदि आपको उचित मालूम न हो तो हमें बुला भेजियेगा हम फौरन आ जायेंगे। क्यों सेठजी।

हाँ, बिलकुल। इसमें क्या शक है। पर यह नौबत ही नहीं आयेगी। जहाँ धर्म हैं वहाँ क्या गम है?

और अन्त में राजा ने कह ही दिया कि सार्थपति ! आपको मैं अपनी प्राण से अधिक कन्या और शीयलवती सौंपता हूँ। इसे शीयलवती का साथ होने से बहुत बड़ी सोहबत और आपका हमारा मिल जाने से बहुत बड़ी हिम्मत हांसिल हो गयी है।

सुदर्शना की ऐसी इच्छा है कि भृगुकच्छ में बहुत बड़ा और बढ़िया जैन मंदिर बनवाया जाय, उपकारी गुरुओं की खूब सेवा भक्ति की जाय। प्रभु-गुरु-सेवा में जीवन सफल बनाया जाय। मैं इसका माकूल इंतजाम और बढ़िया सामग्री इकट्ठी करवाता हूँ। आगे इसकी जैसी इच्छा। जाने वाले को कोई कहाँ तक रोकेगा? जाने वाला कब रुका है। अच्छी बात है सुख से जाओ बेटी और अपनी आत्मा का हित साधो।

यह सुनते ही सुदर्शना आनन्द में आकर जैसे नाचने लगी। शीयलवती भी प्रसन्न हो उठी। किन्तु रानी एकदम उदास हो गयी। सब उठे ! स्नान-पूजा आदि से निवृत्त हो भोजन से निपटने के बाद सुदर्शना शियलवती अपनी तैयारी

में लगे। श्रेष्ठी एवं राजा भी अपने-अपने आदमियों को आवश्यक सूचनायें देने में व सफर की तैयारी में लग गये।

रात्रि ने पृथ्वी पर एकाधिकार जमा लिया था। अंधेरे ने मानो सारी दुनिया निगल ली थी। सारी चेतना निद्रादेवी की गोद में सो गयी थी । जाग रही थी मात्र सिंहलकी महारानी। देवी चन्द्रलेखा। वे शयन में पड़ी करवटें बदल रही थीं। रात गुजरती जा रही थी, किन्तु उन्हें थोड़ा भी चैन, कोई करार न था। उनकी पीड़ा जैसे बढ़ती ही चली जा रही थी। आधी रात तो कबकी बीत चुकी थी पर उन्हें नींद की एक झपकी तक नहीं आयी थी।

बेबस और बेकरार हो वे अपने पलंग से उठ सुदर्शना के शयन में आ बैठी और बेटी का मुख देख-देखकर रोने लगे। रात घट रही थी और रानी का दुःख बढ़ रहा था। वह अपने आपको सम्हाल न सकी और रोने की आवाज सुनकर सुदर्शना जाग उठी।

अरे! माँ, तुम? यहाँ ? अभी ? अरे तुम तो रो रही हो। क्यों? क्या हुआ, तुम्हें?

हाँ, माँ! क्या बात है? इतनी क्यों परेशान हो माँ ?

क्या तू सचमुच हमें छोड़कर चली जायेगी?

ओह, माँ! कैसे समझाऊँ? इसलिए तुम हैरान हो?

हाँ बेटी! मुश्किल से लाख-लाख बार इच्छा करने पर, कुलदेवी की अनुकम्पा से, मैंने तुझे पाया है। मैंने तो तुझे कभी खेलते-कूदते भी नहीं देखा। कैसे मेरे हसरत भरे अरमान थे कि तू हमउम्र सहेलियों के साथ खेले, सखियाँ तेरी मजाक करें और तेरा मुख सुर्ख हो उठे। तेरे हाथ पैरों में मेंहदी लगाई जाय, तेरी मांग भरी जाय, आंगन में शहनाई बजे, तू दुलहन बने। डोली सजायी जाय, और बारात.........।

माँ, तुम कैसी-कैसी बातें कर रही हो। माँ तुम समझती क्यों नहीं हो? कैसी अर्थहीन बातों को तुम महत्त्व दे रही हो और अर्थ पूर्ण बातों को तुम सुनने को भी राजी नहीं हो।

समझती तो तुम नहीं हो। व्यर्थ की सारी बातें तो इस खानदान में तुमने ही पैदा की हैं। यह बातें तो अपनी हजार पीढ़ी में भी किसी ने नहीं की हैं। और कुछ नहीं तो मेरे हृदय को मेरे वात्सल्य को तो देखो।

माँ, वात्सल्य तो मैंने भी चक्खा है। हाँ, माँ का वात्सल्य। पर जिसमें अर्थ ही न हो उसे क्या करियेगा? फिर वह वात्सल्य क्या काम का जो अपना ही काम अटकावे या अपने को ही बांधे?

अरे! भगवान्! मेरी बेटी को यह क्या हो गया? क्या तेरी उम्र है और कैसी कोमल काया? नहीं, तुझे कहीं नहीं जाना है।

जो चाहिये सो तुझे यहाँ ला देंगे। मन्दिर भी यहीं बनवायेंगे। सात समंदर पार की चीजें तेरे लिये यहाँ मंगवाऊंगी लेकिन तुझे जाने तो नहीं दूंगी।

मां, आखिर यह अपना परिवार अनजान मुसाफिरों का मैला है। पता नहीं कौन कहाँ से आया है। कौन कब कहाँ को चल देगा? यह मेला बिखरेगा क्योंकि मेले लगते ही बिछड़ने के लिये हैं। जब बिछड़ना पक्की बात है तो बहुत बढ़िया काम के लिये थोड़े दिन पहले बिछड़ना कोई ख़राब बात नहीं है। फिर तुम तो मुझे किसी और को देने को सोच रही थी-डोली और बारात। न मालूम क्या क्या बोल रही थी। तो डोली में भी बैठाकर भी आखिर तो तुम बिदा ही दोगी ना। मेरी तो आत्मा ही डोली है और परमात्मा का घर ही पिया का घर है। तुम कहती हो उम्र की बात, फालतू बात। यही तो उम्र है चाहे तो उसे योग में लगाओ, चाहे तो भोग में लगाओ। योग से अमरत्व और भोग से रोग और मृत्यु। योग से परमतृप्ति संतोष, भोग से सदा अतृप्ति और असंतोष की आग। इसी उम्र में चलता-चलता जीव अपनी मंजिल की राह में कहाँ से कहाँ पहुँचता है। वरना जिन्दगी पूरी हो जाती है, इच्छाएं पूरी नहीं होतीं। यह मन सोचता है भोगते-भोगते मन भर जायेगा। यही सोचना बड़ा घातक होगा। उम्र बीत जायेगी, शरीर झुककर मुड़ जायेगा पर धरपत नहीं जायेगी। उन महात्माओं को बार बार धन्य है, जिन्होंने ज्ञान और बोध से अपनी शाश्वत आत्मा को तृप्त किया है। वे ही प्रशंसा से पात्र हैं जो घोर-अति पुरुषार्थ कर संसार के बन्धन तोड़ने में सफल हुए हैं।

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:
   - Vol - 1 (satakas 1- 2) Price : Rs. 150.00
   - Vol - 2 (satakas 3- 6) 150.00
   - Vol - 3 (satakas 7- 8) 150.00
   - Vol - 4 (satakas 9- 11) 150.00
2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates Price : Rs. 100.00
   (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism Price : Rs.
10. Dr. Lata Bothra- The Harmony Within Price : Rs. 100.00
11. Dr. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira Price : Rs. 100.00
12. Dr. Lata Bothra- Jainism - An Image of- Antiquity Price : Rs.

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 50.00
5. Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira Price : Rs. 60.00

6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Dr. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Dr. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Dr. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Dr. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Dr. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00
7.	Dr. Lata Bothra-Atma Darshan		
8.	Dr. Lata Bothra-Adinath Rsabhdev and Ashtapad		

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2230-8105/2139,

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2454-5650

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029,
Ph: (S) 2464-1186, (R) 2475-3133

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2230 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-8181-4/8780 (R) 2249-1243

SUVGYA BOYED
340, Mill Road, Apt. # 1407
Etobicolse, onterio m9 Cly8
416-622-5583

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2230-2074/8958 (D) 2230-3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2257-1697/7059 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

ARBEITS INDIA

8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2287-6516
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO

MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.

Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG

Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2287-9277, 2287-2826
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR

Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS

M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2237-6255

KRISHNA JUTE COMPANY

Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230-0871/9372, 3022937172
(M) 9330926774

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 3288-8088/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2210-3253
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Dusaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s. B.B. Enterprises
24 Ray Street, 2nd Floor, Kolkata - 700 00
Phone : 3258-2284/9831030188

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamond
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2272-3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes

INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES

40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.

Freight & Chartering Brokers

12-B, N. S. Road; Kolkata - 1

PH : 2230 5059 / 2230 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-

STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS

13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

SHIV KUMAR JAIN

"Mineral House"

27A, Camac Street, Kolkata - 700 016

Ph: (Off) 2287-7880, 2287-8663, Res) 2287-8128, 2287-9546

MAHENDRA TATER

Block No. 2, 3rd Floor,

45/4A, Chakraberia Road (S)

Kolkata - 700 025

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.

Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)

2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001

Ph: 2230-7162, 2231-5540, Fax : (91)(33)2220 6400

e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

TAPAN KUMAR SAHELA

Office :

Shiv Bhawan, Police Line Road

Bhagalpur - 812001

Phone : 0641-2421091, 2301041 (O)

(Mob.) 9431214315

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 2287-3450/3758, 2281-1690, 2290-0514/3450
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

WITH BEST WISHES
जो एक को जानता है, वह सबको जानता है और
जो सबको जानता है वह एक को जानता है।

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2230 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-256896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230 3142 (O) 2475 0995,
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

BIKASH CHHAJER
Director
SITAL GROUP OF COMPANIES
'Centre Point', 21, Hemanta Basu Sarani
2nd Floor, Room No. 226, Kolkata - 700 001
Phone : 2242-9265, 2210-9228, Fax : (033) 2242-9265
Mobile : 98310 22577, E-mail : finncon@vsnl.net

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

- Anusandhan
- Kolkata Nasta
- Badsha Khan
- Picnic
- Raja
- Shubham
- Bhaonagari Ghantia
- Jocker
- Lajawab
- Papri Ghantia
- Rim Jhim
- Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3293-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK

45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025

(Near Jadu Babu's Bazar)

Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm

All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbi eared to tread) .

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B. JAIN
JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

TITTHAYARA
Vol XXX. No. 11
25th Faburary 2007

Registered
No. SSRM/KOL./RMS/WB/ RNP - 070/2007-09
R.N.I. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

卐

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225